डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 मई 2010 मूल्य - पाँच रुपये

अजायब बानी

{गुरु महिमा}

वर्ष - आठवां | अंक-पहला | मई -2010 | मासिक पत्रिका

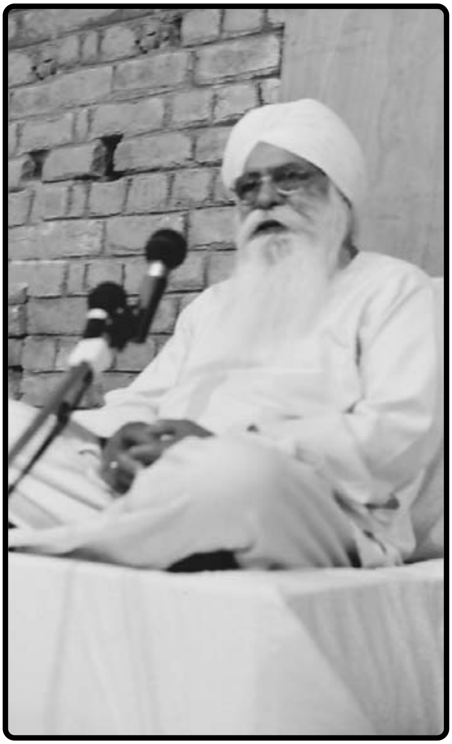

4

आन के दवारे उत्ते बैठे मेरे दातया

(कबीर साहब की बानी)
सतसंग-परम सन्त अजायब सिंह जी
16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

23

सवाल-जवाब

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्री गंगानगर -335 001 (राजस्थान) से प्रकाशित किया ।
फोन - 09950 55 66 71 (राजस्थान) व 09871 50 19 99 (दिल्ली)
विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन-09928 92 53 04, 09667 23 33 04
उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग :** रेनू सचदेवा, संजीव सूरी व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 98 | Website : www.ajaibbani.org

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

आन के दवारे उत्ते बैठे मेरे दातया

कबीर साहब की बानी | 16 पी.एस. आश्रम राजस्थान

आन के दवारे उत्ते बैठे मेरे दातया, आपणियां रुहां नूं संभाल
मेरे दातया, आपणियां रुहां नूं संभाल (2)

नरकां च सुटणे लई काल है वंगारदा,
रुहां दे फसोणे नूं बहुत रुप धार दा, (2)
वासता ई रबदा, बचाई मेरे दातया,
दुःखियां दी सुण के पुकार मेरे दातया, आपणियां रुहां नूं संभाल

कूड़ दा हनेरा जग उत्ते आके छा गया,
छुप गया सच उड अम्बरां नू धा गया, (2)
दया ते धर्म, घबराऐ मेरे दातया,
ओखे बेले पुछ लयो सार मेरे दातया, आपणियां रुहां नूं संभाल

सारीयां जगाह दे उत्ते पाए फंदे काल ने,
जाल जो विछाए ऐहे टुटने मुहाल ने, (2)
दरगाह च आन के, बचाई मेरे दातया,
सतगुरु दीनदयाल, मेरे दातया, आपणियां रुहां नूं संभाल

धन कृपाल धन सावन प्यारया,
तपदे अजायब नू पलां दे विच ठारया, (2)
संगत नू दर्श, दिखाई मेरे दातया,
भुलिए ना तेरा उपकार, मेरे दातया, आपणियां रुहां नूं संभाल

हर रोज की तरह आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है। यह बानी किसी खास विषय पर नहीं बोली गई जैसा किसी ने सवाल किया कबीर साहब उसे बड़े अच्छे तरह से समझा रहे हैं।

कबीर साहब पहले सन्त हैं जो कभी इंसानी जामें से नीचे नहीं गए और न कभी माता के पेट से पैदा हुए। विरोधियो ने आपके बारे में बहुत सी मनघड़ंत बातें लिखी हैं। अभी शब्द में बोला गया है कि दया-धर्म अम्बरों में चला गया है, सच छिप गया है; सच्चाई कोई नहीं

जानता। सच्चाई की तरफ से हमारी आँखें बंद हैं। जब ऐसी हालत होती है तब परमात्मा खुद ही इंसानी जामें में आता है।

प्यारेयो! जिन्हें परमात्मा से इश्क हो जाता है वे बादशाहियो को ठुकरा देते हैं। शाह बल्ख बुखारा के अंदर विरह-तड़फ पैदा हुई। मैं बताया करता हूँ कि परमात्मा के हाथ में सब कुछ है उसकी मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता। उसकी दया हो तो वह खुद ही अपने मिलने का वसीला बना लेता है।

जिस समय कबीर साहब संसार में आए उस समय बल्ख बुखारा की तरफ जाने का कोई साधन नहीं था। कबीर साहब ने शाह बल्ख बुखारा की तड़फ और प्यार को पूरा करना था इसलिए आप रात के समय शाह बल्ख बुखारा के महल के ऊपर घूमने लगे। शाह बल्ख बुखारा के दिल में हैरानी हुई कि राजमहल के ऊपर एक इंसान घूम रहा है जबकि दरवाजो पर सख्त पहरा लगा हुआ है; पहरेदारों के हाथों में रायफलें हैं वे चिड़िया तक को उड़ने नहीं देते।

शाह बल्ख बुखारा ने कबीर साहब से पूछा, ''आप कौन हैं जो रात के समय महल के ऊपर घूम रहे हैं?'' कबीर साहब ने कहा, ''मैं सारवान हूँ मेरा एक ऊँट खो गया है मैं उसे ढूंढने के लिए यहाँ आया हूँ।'' शाह बल्ख बुखारा ने कहा, ''इतने ऊँचे राजमहल पर ऊँट कैसे चढ़ सकता है?''

शाह बल्ख बुखारा तड़फ और प्यार तो रखता था लेकिन फूलों की सेज पर सोता था। कबीर साहब ने कहा कि तुम जो कर रहे हो उसका परमात्मा की भक्ति के साथ कोई मेल नहीं। क्या कभी किसी को फूलो की सेज पर रंग रलियां मनाते हुए परमात्मा मिला है? अच्छी आत्माओं के लिए इतनी सी ठोकर ही काफी होती है।

सुबह शाह बल्ख बुखारा कचहरी में गया तो वह रात वाले सपने से ही परेशान था क्योंकि अच्छी आत्माओं के सपने हमारे जैसे नहीं होते। वे फिर भी तर्जुबा करते हैं कि क्या हुआ? कबीर साहब फिर से

एक रोबदार व्यक्ति का रूप धारण करके कचहरी में गए। उन्होंने इस तरह का रूप बनाया हुआ था कि कोई उन्हें रोक न सके। कबीर साहब ने शाह बल्ख बुखारा के तख्त के पास पहुँचकर कहा, ''बादशाह सलामत! मैं कुछ समय इस सराय में रहना चाहता हूँ।''

शाह बल्ख बुखारा ने अपने मंत्री से कहा कि इसे समझा दो शायद इसका दिमाग ठीक नहीं है, यह सराय नहीं राजमहल है; बादशाह की कचहरी है। मंत्री ने कबीर साहब से कहा कि आपको गलती लगी है यह सराय नहीं बादशाह की कचहरी है, बादशाह का महल है। कबीर साहब ने कहा, ''इसे किसने बनवाया?'' उसने कहा कि इसे हमारे बाप-दादा ने बनवाया था। कबीर साहब ने कहा, ''वे कहाँ हैं?'' उसने कहा कि वे संसार छोड़ गए हैं। कबीर साहब ने कहा कि वे ये महल साथ क्यों नहीं ले गए? यह सराय नहीं तो और क्या है?

वहाँ पर एक गुलाम को बुलवाकर पूछा गया कि तुम क्या खाओगे? गुलाम ने कहा कि नौकर क्या और नखरा क्या? जो देंगे खा लूंगा फिर पूछा कि क्या पहनेगा? उसने कहा जो देंगे पहन लूंगा फिर पूछा कितनी तनख्वाह लेगा? उसने कहा कि मैं आपका गुलाम हूँ मेरी क्या मर्जी है? आप जो दे देंगे ले लूंगा। शाह बल्ख बुखारा के दिल को चोट लगी कि ऐसे गुण तो मेरे अंदर भी नहीं हैं जो एक मामूली गुलाम में हैं। यह मालिक के हुक्म में रहकर कितना खुश है। आखिर शाह बल्ख बुखारा श्मशान भूमि में जाकर बैठ गया।

शाह बल्ख बुखारा के घर में दावत थी अच्छे-अच्छे पकवान बने हुए थे। उसका लड़का उसे बुलाने के लिए गया कि आपका घर पर आना जरूरी है। शाह अपने दिल की बात किसे बताए कि उसके साथ क्या हो रहा है? शाह बल्ख बुखारा घर पर आया। उसे खाने के लिए हलवा दिया गया। उसने हलवे को शीशे पर लगा दिया और अपने बेटे से कहा क्या इस शीशे में मुँह साफ दिखाई दे रहा है? उसके बेटे ने

कहा, नहीं। इसी तरह खाने के स्वाद हमारी आत्मा को ऐसे धुंधला कर देते हैं जैसे हलवे ने इस शीशे को धुंधला कर दिया है।

कबीर साहब कहते हैं, ''कोई ऐसा है जो स्वयं अपना घर फूँक दे, मैंने लोगों को बहुत जोर देकर कहा किस तरह घर फूँकना है?'' जिस तरह शाह बल्ख बुखारा ने 'नामदान' प्राप्त करने के लिए बारह साल कबीर साहब का ताना बुना। उसे इश्क लग गया था। इश्क दुनिया की तरफ से खत्म कर देता है; गली-गली में भीख मँगवा देता है। रांझा को हीर से इश्क लगा उसने रो रोकर कान फड़वाए।

सभी जानते हैं कि हीर रांझा संसार में पति-पत्नी के रूप में पैदा नहीं हुए थे; हमें इनका बहुत पुराना इतिहास मिलता है। सन्त-महात्माओं ने 'रूह' को हीर और 'शब्द' को रांझा-परमात्मा कहा हैं। जिस तरह परमात्मा सचखंड के सुख छोड़कर आत्मा के लिए इस संसार में आता है। उसे भी अपनी अंश के कारण इश्क लग जाता है वह आत्मा के लिए फकीर हो जाता है, खाने-पीने का स्वाद छोड़ देता है। जिस तरह रांझा ने रोकर अपने कान फड़वाए थे कि इस उपाय के बिना मैं अपनी हीर से नहीं मिल सकता। उसी तरह मालिक भी संसार में आकर बहुत दुख सहता है कि मैं किस तरह अपनी आत्मा से मिलूं!

हजरत वारे शाह कहते हैं कि हीर, मन के बहकावे में आकर रांझा की बात सुनने को तैयार नहीं होती। जब एक बार रांझा हंसकर कह देता है तो हीर रूपी आत्मा मेहरबान हो जाती है सारी जिंदगी उसे छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती। चाहे सारी दुनिया एक तरफ हो जाए वह कहती है कि यह मेरा पति परमात्मा है। जिन्हें इश्क लग जाता है वे बादशाहत की भी परवाह नहीं करते।

मैं बताया करता हूँ कि बहुत से लोग शादी नहीं करवा सकते या उनके पास पैसे नहीं होते इसलिए वे त्यागी बन जाते हैं लेकिन जब धन मिलता है तो वे अपने कीमती असूल कुर्बान कर देते हैं अगर दो-चार औरतें आकर माथा टेकती हैं तब पता चलता है कि यह कितना त्यागी

हैं। जिसे परमात्मा ने संसार के सारे सुख-आराम अच्छी धन-दौलत अच्छा शरीर अच्छी अक्ल और जायदाद दी हो अगर वह उन सुखों को लात मारकर त्याग करे तो वह बहादुर है सूरमा है।

सतगुरु जिस जगह रहते हैं उस जगह संगत के लिए थोड़ा बहुत मकान वगैरहा भी बनवाते हैं। जब महात्मा शरीर छोड़ जाते हैं तो उनके जाने के बाद पता चलता है कि हम कितने त्यागी वैरागी हैं। उस जायदाद के लिए किस तरह लोग लड़ते हैं और कितने लोग अपना हक जताते हैं। सतगुरु किसी खास परिवार या जाति के लिए संसार में नहीं आते। सारा संसार सन्तों का अपना घर होता है। वे किसी के साथ नफरत नहीं करते। कबीर साहब समझा रहे हैं ध्यान से सुनें।

कबीर ऐसा को नही इह तन देवै फूकि।
अंधा लोगु न जानई रहिओ कबीरा कूकि।।

आप कहते हैं जिनके अंदर आशा, तृष्णा, लोभ है क्या ऐसे लोग तन को जला सकते हैं अगर इन सबको बाहर निकालकर रख दें तभी तन को जलाया जा सकता है। मैं रात-दिन कह रहा हूँ कि आशा, तृष्णा, लोभ, इन्द्रियों के भोगों से बचें लेकिन कोई भी सुनने के लिए तैयार नहीं; साथ चलने के लिए क्या तैयार होना था?

कबीर सती पुकारै चिह चड़ी सुनुहो बीर मसान।
लोगु सबाइआ चलि गइओ हम तुम कामु निदान।।

एक औरत श्मशान भूमि में सति हो रही थी। उसने आस-पास खड़े लोगों को उपदेश किया लेकिन शोर-गुल में किसी ने कुछ नहीं सुना। लोगों ने कबीर साहब से पूछा कि यह क्या कह रही है? कबीर साहब ने कहा, ''यह औरत कह रही है कि यह आदमी चला गया है मेरी भी तैयारी है। आप भी पीछे तैयार रहें यहाँ किसी ने नहीं रहना। भाई! नाम जपें, 'नाम' ही आपके साथ जाएगा।'' कबीर साहब कहते हैं कि यह औरत सबको चेतावनी दे रही है। गुरु नानक जी कहते हैंः

सतिया ऐह ना आखिए मड़या लग जलन।
सतिया सेई नानका जो बिरह चोट मरन।

वह औरत सति नहीं जो पति के साथ जल जाए, ऐसा करना तो आत्मघात है। सन्त सदा ही इसका विरोध करते हैं। वह औरत सति है जो अपने पति के अलावा किसी की तरफ न देखे। ऐसा ही असूल मर्द के लिए भी है। किसी को बुरी निगाह से देखना सबसे बड़ा गुनाह है। बानी में आता हैः

पर तिरया रूप न पेखे नेत्र, साध की टहल सन्त संग हेत।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जब आप अपनी माता, पिता या बहन-भाईयों की तरफ देखते हैं तब आपके दिल में कोई बुरा ख्याल नहीं होता; देखने के तरीके में फर्क होता है। किसी को बुरी नजर से मत देखें।''

कबीर मनु पंखी भइओ उडि उडि दहदिस जाइ।
जो जैसी संगति मिलै सो तैसो फलु खाइ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जो लोग कहते हैं कि हमारा भजन अभ्यास नहीं बनता वे सोचकर देख सकते हैं कि उनका मन उड़कर संसार की तरफ जाता है। यह मन कभी पुत्र, कभी पुत्री की शक्ल आँखों के आगे लाता है कभी दुनिया की धन-दौलत का ख्याल लाता है। हर बीती हुई बात को याद करवा देता है। तब क्या आप भजन कर रहे होते हैं? यह भजन नहीं है। हम भजन पर बैठे होते हैं लेकिन यह मन कभी जर्मनी का चक्कर लगाता है कभी फ्रांस का चक्कर लगाता है। कभी कहीं तो कभी कहीं जाता है इसी तरह हमने जिंदगी भर जो काम किए होते हैं हमें उनका ही ख्याल आता है।''

हमारे ऊपर संगत का बहुत असर होता है। अच्छे लोगों की संगत करते हैं तो अच्छा फल खा लेते हैं बुरे लोगों की संगत करते हैं तो बुरा नतीजा मिलता है।

कबीर जाकउ खोजते पाइओ सोई ठउरु।
सोई फिरि कै तू भइआ जाकउ कहता अउरु।।

आप कहते हैं, ''सुना था कि तीर्थों पर जाने से पुण्य लगता है परमात्मा मिल जाता है। हिन्दु शास्त्रों के मुताबिक यज्ञ किए, खट-कर्म किए। वेद-शास्त्र भी मन लगाकर पढ़े। ऐसा करने से न मन को शान्ति आई न परमात्मा ही मिला।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी कुदरत का असूल है जरूर देती है।'' अगर हमारे अंदर प्यास है तो कुदरत जरूर हमारे लिए इंतजाम करेगी अगर हमें भूख लगी है तो कुदरत खाने का इंतजाम भी करती है।

मैं जब पहली बार अमेरिका गया तो बहुत से प्रेमी दूर-दूर के द्वीपो से आए उन्होंने बताया, ''महाराज कृपाल ने उन्हें अनुभव दिया कि मैं सन्तबानी आश्रम में हूँ आप वहाँ जाएं।'' ऐसे और भी बहुत से वाक्य देखने को मिल जाते हैं जिन्हें बयान करें तो बहुत सी किताबें बन सकती हैं।

यह सब उस गुरु की दया होती है। चाहे वह देह रूप में आए! चाहे 'शब्द-रूप' में आए! वह कई बार शब्द-रूप में भी 'नाम' दे देता है यह उसकी खास दया होती है। वह नजदीक बुलाने की भी ताकत रखता है ।

कबीर साहब कहते हैं, ''हमारे अंदर तड़प थी परमात्मा खुद ही आकर हमें मिल गया। जब हम खोज करके सन्त-महात्माओं की संगत में गए उन्होंने हमारे अंदर 'शब्द-नाम' की कमाई का शौक, विरह और तड़प पैदा की। जब हम इस रास्ते पर गए तो जो रास्ता हम तीर्थों, धर्मग्रन्थों, जंगलो-पहाड़ो में ढूंढते थे हमें अपने अंदर से ही मिल गया।''

सोई फिरी कै तू भइआ जाकउ कहता अउरु।।
कबीर मारी मरउ कुसंग की केले निकटि जु बेरि।
उह झूलै उह चीरीऐ साकत संगु न हेरि।।

अब आप केले और बेरी की मिसाल देकर समझाते हैं, ''केले का पत्ता चौड़ा होता है वह बेरी को हवा देता है कि इसको गर्मी न लग जाए। जब बेरी हिलती है तो उसके काँटे केले को चीरते हैं। बेचारा गरीब केला सेवा करता हुआ भी काँटो का दर्द सहता है। हम पर कुसंगत का ऐसा ही असर पड़ता है।'' हजरत बाहु कहते हैंः

नाल कुसंगी संग न करिए, कुल नू लाज ना लाईए हू।

कुसंगी का संग करने से आपकी कुल को लाज लग जाएगी। हमारी और परमात्मा की एक ही कुल है। आप कहते हैं कि देखो! केला कुसंगति का कितना बुरा फल ले रहा है।

कबीर भार पराई सिर चरै चलिओ चाहै बाट।
अपने भारहि ना डरै आगै अउघट घाट।।

किसी ने कबीर साहब को बताया कोई आपकी नकल करके गुरु बनता है, नाम देता है। कबीर साहब उसे प्यार से समझाते हैं कि जो

आदमी खुद अपना भार नहीं उठा सकता अपने पापों के भार से दबा हुआ है, वह दूसरों का भार कैसे उठाएगा? वह किस तरह अपनी मंजिल पर पहुँचेगा? चेले बनाकर उनसे कहता है कि मैं तुम्हें परमात्मा से मिलवा दूंगा, मैं तुम्हारे कर्म खत्म कर दूंगा। जो खुद ही मन-इन्द्रियों से आजाद नहीं वह दूसरों को कैसे आजाद कर देगा?

जिसने खुद कमाई नहीं की वह दूसरों को कमाई करने के लिए कैसे कहेगा अगर वह ऐसा करता है तो वह खुद भी धोखे में है और दूसरों को भी धोखे में रख रहा है। उसे पता नहीं है कि परमात्मा हमारी हर हरकत को देखता है हर साँस का लेखा-जोखा रखता है अगर हम गलती करते हैं तो उसकी सजा देता है अगर 'नाम' जपते हैं तो उसका ईनाम भी देता है।

कबीर बन की दाधी लाकरी ठाढी करै पुकार।
मति बसि परउ लुहार के जारै दूजी बार॥

कबीर साहब कहते हैं, ''हम लकड़ी काटकर लाते हैं जलाकर उसका कोयला बना लेते हैं। वह लकड़ी काँपती है और कोयला भी काँपता है। लकड़ी कहती है कि मैं लौहार के हाथ न आ जाऊं! वह मुझे दो बार जलाता है। इसी तरह हमारी देह भी कांपती है अगर मैंने भजन न किया कहीं मैं फिर लौहार धर्मराज के हाथ न आ जाऊं और दोबारा जन्म-मरण के चक्कर में न पड़ जाऊँ ताकि ये मुझे फिर इस जन्म के बाद नरक की आग में न जलाए।''

कबीर एक मरंते दुइ मूए दोइ मरंतह चारि।
चारि मरंतह छह मूए चारि पुरख दुइ नारि॥

गुरु ग्रन्थ साहब के टीके में इसका यह अर्थ किया हुआ है कि एक शिकारी था। शिकारी ने एक हिरनी को बाण मारा, हिरनी के पेट में बच्चा था। उस समय शिकारी को साँप ने डस लिया। शिकारी मर गया और साँप भी मर गया। जब शिकारी की पत्नी को पता चला तो

उसने सोचा! अब जिन्दा रहकर क्या करना है वह भी मर गई उसके पेट में भी बच्चा था; ये चार पुरुष हो गए और दो औरतें हो गई। यह शिक्षा अच्छी है हमें इसे ग्रहण करना चाहिए।

कबीर साहब कहते हैं कि जब हम सन्तों से 'नाम' लेकर पांच पवित्र नामों का सिमरन करते हैं हमारी आत्मा आँखो के पीछे आ जाती है। ऊपर से शब्द धुन आ रही है हम जितना-जितना एकाग्र होते हैं उतना-उतना अंदर जाते हैं जब हम तारे, चन्द्रमा और सूरज पार कर जाते हैं; उसके पीछे गुरु का स्वरूप प्रकट होता है; यहाँ पहुँचकर यह सच्चा शिष्य बन जाता है।

गुरु शिष्य को एक के बाद दूसरा मंडल खुद ही पार करवाता है, यह गुरु की दया है क्योंकि हम वहाँ के वाकिफ नहीं होते। थोड़ा सा अंदर जाने के बाद राग, द्वेष, सुख, दुख ये चारों पुरुष और आशा, तृष्णा दोनों नारियां खत्म हो जाती हैं। इंसान दुखों से घबराता है, सुख की खोज में गुरु के चरणों में आकर भी सांसारिक सुख ही मांगता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो लोग सन्तों के पास आकर कहते हैं कि हमारा मुकद्दमा फतह करवाए, लड़का बीमार है उसे ठीक करें अगर लड़का ठीक नहीं हुआ अगर धन नहीं दिया तो हम सन्तों को नहीं मानते। ऐसे लोग अपने घर में ही बैठे रहें वे सन्तों के पास आने की तकलीफ न करें क्योंकि सन्तों के पास 'नाम' है। नाम जपें ताकि आप फिर इस आशा-तृष्णा, सुख-दुख की दुनिया में हाजिर न हों; सदा सुख नहीं सदा दुख नहीं। यहाँ कौन सी चीज थिर है?'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

बिन तुध होर जे मंगना सिर दुःखा दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरे मन की भुख।

'नाम' जपने से संतोष आ जाता है तृप्ति हो जाती है फिर इंसान इस संसार की वस्तुओं से पीछा ही छुड़वाता है।

कबीर देखि देखि जगु ढूंढिआ कहूं न पाइआ ठौरु।
जिनि हरि का नामु न चेतिओ कहा भुलाने अउर।।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने बहुत भ्रमण किए हैं। मैं बहुत से लोगों से मिला हूँ न कोई सदा बादशाह रहा न कोई सदा गरीब रहा है। कोई भी अपनी जगह पर सदा टिककर नहीं रहा। हम क्यों यहाँ भ्रम में रह रहे हैं? जिसने यहाँ 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं की वह भूला हुआ है परेशान हुआ फिरता है।'' महात्मा कहते हैं:

कल्ला आया है कल्ला जाएगा, दूजा रब है अगर ध्याऐगा।

मैं बताया करता हूँ कि इंसान मुट्ठी बंद करके जन्म लेता है और मुट्ठी खोलकर चला जाता है। न कोई कुछ लेकर आया है न यहाँ से कुछ लेकर जाएगा। परमात्मा तभी साथ देगा अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करते हैं नहीं तो काल गले से पकड़कर कर्मों के अनुसार योनियों में डाल देता है।

कबीर संगति करीऐ साध की अंति करै निरबाहु।
साकत संगु न कीजीऐ जा ते होइ बिनाहु।।

अंत समय में साधु की संगत हमारी मदद करती है। साधु की जितनी भी संगत कर लें अच्छी है। साकत की संगत हमारा सर्वनाश करती है, हमारा परमार्थ खराब करती है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

सज्जन से ही आखिए जो चलदेयां नाल चलन।
जित्थे लेखा मंगिए तित्थे खड़े दसन।

कबीर जग महि चेतिओ जानि कै जग महि रहिओ समाइ।
जिन हरि का नामु न चेतिओ बादहि जनमें आइ।।

आप कहते हैं, ''जब 'शब्द-नाम' की कमाई करके अंदर गए पता लगा कि परमात्मा सबके अंदर बैठा है। सब जीव जन्तु उस परमात्मा ने बनाए हैं वह सबके अंदर बैठा है। जिन्होंने 'शब्द-नाम' की कमाई नहीं की परमात्मा को अंदर प्रकट नहीं किया उनको यम बाँधकर ले जाएंगे,

वे सलाह-मश्वरा नहीं करते। हमें सन्तों की बानी गवाही देती है कि 'नाम' के बिना वहाँ कैसी हालत होती है।'' गुरु नानक साहब कहते हैं:

नामहीन नकटे नर देखे तिन घस घस नाक वडीजे।

पिछले जमाने में बहुत सख्त सजा होती थी अगर किसी से कोई गुनाह हो जाता है तो सख्त सजाएं दी जाती थी। काल घिसाकर नाक काटता है कि मैंने तुझे दुनिया में किसलिए भेजा था?

कबीर आसा करीऐ राम की अवरै आस निरास।
नरकि परहि ते मानई जो हरिनाम उदास।।

कबीर साहब हम दुनियादारों की हालत देखते हुए कहते हैं, ''कोई बेटे से आशा रखता है कि यह बड़ा होकर मुझे खिलाएगा! कोई रिश्तेदार से आशा रखता है शायद यह मेरी मदद करेगा! कोई समाज से आशा रखता है शायद यह समाज मेरी मदद करेगा! ये सब हमारे बंधन के कारण हैं। आज तक किसी बेटे, रिश्तेदार, समाज ने किसी की मदद नहीं की अगर हम परमात्मा से आशा रखें और परमात्मा पर भरोसा रखे कि परमात्मा ही हमें सब कुछ देने वाला है। उसे ही हमारी चिंता है वह हमें नरक में नहीं जाने देगा। जब हम परमात्मा के प्यारे बन जाते हैं उसके हो जाते हैं कि तेरे सिवाय इस संसार में हमारा कोई नहीं है तो परमात्मा को हमारी फिक्र हो जाती है।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''परमात्मा बालक की तरह आकर अपने बच्चे को खिलाता है।'' पलटू साहब कहते हैं, ''जो अंदर चले जाते हैं परमात्मा के साथ प्यार कर लेते हैं अगर उन्हें पसीना आता है तो परमात्मा को बहुत दर्द होता है।'' हम सोचते हैं शायद बेटा, समाज, रिश्तेदार, पत्नी हमारा दर्द करेगी या पत्नी सोचे! पति के बिना कौन उसका दर्द करेगा? प्यारेयो! यह हमारी गलतफहमी है, हमारा भ्रम है। हमारी मदद करने वाला वह परमात्मा, वाहे गुरु, अकालपुरख है जिनके साथ हमें सन्त-सतगुरु जोड़ते हैं।

कबीर सिख साखा बहुते कीए केसो कीओ न मीतु।
चाले थे हरि मिलन कउ बीचै अटकिओ चीतु।।

आप कहते हैं, ''हम यार-दोस्त, परिवार, बड़े-बड़े कुटुम्ब बना लेते हैं कि यह मेरी पत्नी है। ये मेरे बच्चे हैं। ये मेरे जवाई हैं। ये मेरे सास-ससुर हैं। हमारा मन इन सबमें अटक जाता है फिर यही चीजें हमें संसार में लाती हैं।'' अंत समय में जब मामूली सी तकलीफ होती है उस समय माँ कहती है कि बेटियो को बुलवाओ। जो पास बैठे होते हैं वे लड़कियों को लेने जाते हैं। आप सोचें! क्या वो मदद कर सकती हैं?

मैं लालाजी (सरदार रतनसिंह) को पिता समान समझता हूँ। मैं बंबई प्रोग्राम के लिए गया हुआ था पीछे से उसने ज्यादा अदरक खा लिया अदरक ने गर्मी की। वह कहने लगा कि अजीत सिंह को बुलवाओ। हमारे बुर्जुग भागसिंह ने कहा, ''लाला जी! क्यों घबराते हो अपना गुरु पूरा है।'' लेकिन गुरु की तरफ कौन देखता है! गुरु की क्या जरूरत है? लेकिन गुरु बेचारे को जरूरत है कि यह मेरी आत्मा है। अजीत सिंह आपके पास ही बैठा है। अजीत सिंह से पूछें क्या यह आकर फूँक मार देता? सन्त-महात्मा प्यार से समझाते हैं कि उस समय अगर कोई हमारी मदद कर सकता है तो वह गुरु है परमात्मा है।

जैसे अब कबीर साहब की बानी पर सतसंग हो रहे हैं इसी तरह बगोटा में मैंने तुलसी साहब की बानी-रत्नसागर पर बहुत से सतसंग दिए थे। उन सतसंगो में मैंने महाराज सावन सिंह जी की एक मिसाल दी थी जिसमें आप कहते हैं कि एक कुम्हार ने राजदरबार में मिट्टी ढ़ोने के लिए जाना था। आजकल तो मिट्टी ढ़ोने के लिए ट्रक इत्यादि बहुत साधन हैं लेकिन पहले गधियों का इस्तेमाल किया जाता था। वह कुम्हार अपनी गधियों को हाँकते हुए कह रहा था, '' चल बीबी! चल बहन! चल माँ!''

किसी आदमी ने कुम्हार से कहा कि तू इन गधियों को माँ-बहन कह रहा है। कुम्हार बोला, ''हम आजाद किस्म के बड़बोले लोग होते

हैं जो मुँह में आता है बोल देते हैं। मैंने राज दरबार में मिट्टी ढ़ोने के लिए जाना है। मैं प्रेक्टिस कर रहा हूँ अगर राजदरबार में मेरे मुँह से कोई गलत लफ्ज निकल गया तो बादशाह मुझे फाँसी पर लटका देगा।''

सन्त-महात्मा हमें सारी जिंदगी सतसंग सुनाते हैं, हमसे सिमरन करवाते हैं। ये हमसे प्रक्टिस करवाते हैं ताकि अन्त समय में हमारी जुबान पर सिमरन हो, आँखों में गुरु की प्यारी मनमोहनी सूरत हो ताकि हमें कोई परेशानी न आए। जिनसे हमारा प्यार है हम उनके प्यार में बंधे हुए उनके ही पास जाएंगे।

कबीर कारनु बपुरा किआ करै जउ रामु न करै सहाइ।
जिह जिह डाली पगु धरउ सोई मुरि मुरि जाइ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम अपनी तरफ से हर किस्म के उपाय करते हैं कि इसमें कामयाब हों अगर हमारा कर्म साथ न दे, परमात्मा मदद न करे तो वह उपाय किसी काम नहीं आता; जिस तरह टहनी पर पैर रखें तो टहनी मुड़ जाती है। यही हालत हमारे उपाय की है अगर परमात्मा मदद करे तभी वह उपाय हमारे काम आता है।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर आदमी संसार में दुख-सुख, गरीबी-अमीरी, बिमारी-तंदरूस्ती ये छह चीजें लिखवाकर लाता है। हमारे शरीर की रचना बाद में होती है प्रालब्ध पहले बन जाती है जो हमें अवश्य भोगनी पड़ती है; रोकर भोगें या खुश होकर भोगें। इसमें कोई शक नहीं कि हमने सुख-दुख दोनों भोगने हैं। जब वक्त पर आकर घटना घटती है तो हम बेबस हो जाते हैं हम कहते हैं मैंने कोई पाप नहीं किया फिर ऐसा क्यों हुआ? हमें यह ज्ञान नहीं होता कि हमने किया है या नहीं? ये जन्मजात के पाप हैं। ''

महाभारत में धृतराष्ट्र की कहानी आती है। धृतराष्ट्र ने कृष्ण भगवान से पूछा, ''मुझे सौ जन्मों का ज्ञान है, मैंने कोई पाप नहीं किया मैं अंधा क्यों हो गया?'' कृष्ण भगवान ने कहा, ''यहाँ तक तो

तुझे ज्ञान है।'' कृष्ण भगवान अंतर्यामी थे उन्हें कर्मों के खेल की अच्छी जानकारी थी। कृष्ण भगवान ने धृतराष्ट्र के सिर पर हाथ रखकर कहा कि अब तुम खुद ही देख लो। धृतराष्ट्र ने देखा कि वह एक सौ छठे जन्म में एक जानवर की आँखों में सूल चुभो रहा था। हम तो इस छोटे से जीवन को देखते हैं लेकिन हम यहाँ जन्मों-जन्मों के कर्म भोगने के लिए आए हुए हैं।''

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मैं परिहै रेतु।
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु।।

कबीर साहब कहते हैं, ''जो लोगों को उपदेश करते हैं कि आप दान-पुण्य करें, शब्द-नाम की कमाई करें लेकिन वे खुद कमाई नहीं करते यह इस तरह है जैसे और लोगों के खलियानो की देखभाल करते हैं और अपना खेत उजड़ा जा रहा है। लोगों के घरों की आग बुझाते फिर रहे हैं अपना घर जल रहा है। अपना हृदय काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से जल रहा है और लोगों के लिए परोपकार सोचते हैं। जो लोग दूसरों को उपदेश करते हैं लेकिन खुद नहीं करते उनके मुँह में यम रेत डालता है कि तेरा मुँह इसी के काबिल था। सन्त सच कहते हैं क्योंकि उन्होंने आँखो देखा ही कहा है।'' आप कहते हैं:

पहले मन प्रबोधे अपना पीछे अवर रिझावे।

पहले अपने मन को शान्ति दें अपनी आत्मा को मन-इन्द्रियों से आजाद करें फिर लोगों के ठेकेदार बनें। सन्त-महात्मा अपना तर्जुबा बताते हैं कि हमारे मन को इस तरह शान्ति आई है अगर तुम्हें समझ आता है तो तुम भी करके देखो तुम्हे भी शान्ति आ जाएगी। उनकी जिंदगी में ही प्रेमी आकर बताते हैं कि उनकी तरक्की हुई उनके मन को शान्ति मिली। महात्मा कभी किसी को अंधविश्वास नहीं देते न खुद ही अंधविश्वास पर यकीन करते हैं। वे कहते हैं आओ, करो और देखो।

कबीर साधू की संगति रहउ जउ की भूसी खाउ।
होनहारु सो होइहै साकत संगि न जाउ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप दिन-रात साधु की संगत में रहें। जौं की रोटी तो बहुत अच्छी है अगर जौं के भूसे की रोटी भी मिले तो यह समझें कि हमारे कर्मों के अनुसार ही मिल रही है। परमात्मा हमारे कर्मों के हिसाब से दे रहा है। आपको चाहे कितनी भी कठिनाई क्यों न आए भूसे की रोटी छोड़कर साकत की संगत में न जाएं।''

कबीर संगति साध की दिन दिन दूना हेतु।
साकत कारी कांबरी धोए होइ न सेतु।।

आप कहते हैं साधु की संगत के साथ दिन-दिन दोगुणा प्यार लगाएं। साकत काली कंबली जैसा है वह धोने से साफ नहीं हो सकता। कंबल को चाहे जितना साबुन लगा लें वह साफ नहीं होता।

कबीर मनु मूंडिआ नही केस मुंडाए कांइं।
जो किछु कीआ सु मन कीआ मूंडा मूंडु अजांइ।।

एक आदमी सिर मुँह मुंडवाकर कबीर साहब के पास गया और बोला, ''मैं सन्यासी बन गया हूँ अब मुझे परमात्मा मिल जाएगा।'' कबीर साहब कहते हैं, ''अरे भले मानस! कसूर तो तेरे मन ने किया है अगर सिर मुँह मुंडवाने से परमात्मा मिलता होता तो भेड़ो को मिल जाता उनका मुंडन तो हर साल होता है। हमने तो अपने मन को समझाना है। महात्मा का यह मतलब नहीं कि आप सिर क्यों मुंडवाते हैं या बाल क्यों रखते हैं?''

कबीर रामु न छोडीऐ तनु धनु जाइ त जाउ।
चरन कमल चितु बेधिआ रामहि नामि समाउ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''आप 'शब्द-नाम' की कमाई न छोड़े चाहे आपका तन-धन चला जाए। मन को संसार की तरफ से हटाकर 'शब्द-नाम' में लगाए रखें। 'शब्द-नाम' की कमाई अवश्य करें परमात्मा की भक्ति अमोलक है।''

कबीर जो हम जंतु बजावते टूटि गई सभ तार।
जंतु बिचारा किआ करै चले बजावनहार।।

कबीर साहब पहले कोई बाजा वगैरहा बजाते थे। जब 'शब्द-नाम' की कमाई की अंदर सुरत लगी परमात्मा प्रकट हो गया तो आप खामोश होकर बैठे थे। जो प्रेमी आपके पास आते थे उन्होंने कहा, महाराज जी! क्या बात है आज आप चुप बैठे हैं बाजा क्यों नहीं बजा रहे? कबीर साहब ने कहा, ''देखो प्यारेयो! जो बाजा बजाते थे उसकी तार टूट गई है अब यह बाजा क्या करे? जब बजाने वाला ही न रहा क्योंकि अब मुझे पता चल गया है कि अंदर की आवाज इस तार की आवाज से बहुत प्यारी है। परमात्मा अंदर है, इस बाजे में कोई रस नहीं। बाहरी बाजे पर मन मस्त होता है, अंदर वाले राग पर आत्मा मस्त होती है।''

कबीर माइ मूंडउ तिह गुरु की जा ते भरमु न जाइ।
आपे डुबे चहु बेद महि चेले दीए बहाए।।

कबीर साहब के पास एक जिज्ञासु आया जिसने बहुत से गुरु धारण कर रखे थे। उस जिज्ञासु ने कबीर साहब से कहा, ''महाराज जी! सबने विधा पढ़ाई लेकिन अंदर टिकाव नहीं आया, मैं जिस चीज को खोज रहा हूँ उसका साधन रास्ता नहीं मिला। सब गुरु यही कहते हैं कि वेदों के मुताबिक कर्म-धर्म करो।'' जब महात्मा की बानी पढ़ते हैं तब पता चलता है।

कर्म धर्म पाखंड जो दीसे तिस जम जोगाती लूटे।

इन सब चीजों को यम लूट लेते हैं। कबीर साहब बहुत सख्त लफ्ज इस्तेमाल करते हुए कहते हैं, ''ऐसे गुरु की माँ का सिर मूंड दें जो ये भ्रम ही नहीं मिटा सकता कि आपके अंदर ज्योति और नाद है और वह ज्योति-नाद से नहीं जोड़ सकता। ऐसा गुरु खुद तो रीति-रिवाज में लगा हुआ है और उसने अपने चेलों को भी रीति-रिवाज में लगाया हुआ है।''

कबीर जेते पाप कीए राखे तलै दुराइ।
परगट भए निदान सभ जब पूछे धरमराइ।।

कबीर साहब कहते हैं, ''हम यहाँ पाप करते हैं झूठ बोलते हैं और उनको छिपा लेते हैं लिफाफे में बंद कर लेते हैं कि मैंने कोई पाप नहीं किया। जब धर्मराज की कचहरी में जाते हैं तो सिनेमा की स्क्रीन की तरह हमने जो कुछ किया होता है सब देख लेते हैं।''

जिन ताकतों के कहने पर हम पाप करते हैं झूठ बोलते हैं वे सभी मदारी की डुगडुगी की तरह बजाकर कहते हैं कि प्यारेया! ये सब तूने ही किया है। हम तुझे ठगकर ले आए हैं। झूठ बोलना और उसे छिपाना एक और झूठ हो गया। पाप करना और उसे छिपाना एक पाप और हो गया। गुरु नानक साहब जी कहते हैं:

अवगुण फिर लागु भए कूड़ बजाए तूर।

वह तभी बाहर प्रकट हो जाता है। परमात्मा के बही खाते में उसी समय दर्ज हो जाता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''इंसान एक झूठ बोलता है उसे छिपाने के लिए पच्चीस और झूठ बोलता है। एक पाप को छुपाने के लिए और पाप कर बैठता है।

अंदर बहिके पाप कमाणा सो चोह कुंट की जानिए।

कबीर हरि का सिमरनु छाडि कै पालिओ बहुतु कुटंबु।
धंधा करता रहि गइआ भाई रहिआ न बंधु।।

कबीर साहब कहते हैं, ''मालिक का सिमरन छोड़ दिया दुनियावी धंधो और विषय-विकारों में लग गया लेकिन जब मौत आई तब कोई भाई, बेटा, समाज साथ नहीं गया। हमें यह भी पता नहीं कि पहले किसने जाना है? कई हमें छोड़कर चले जाते हैं और कईयों को हमने छोड़कर चले जाना है।''

❋❋❋

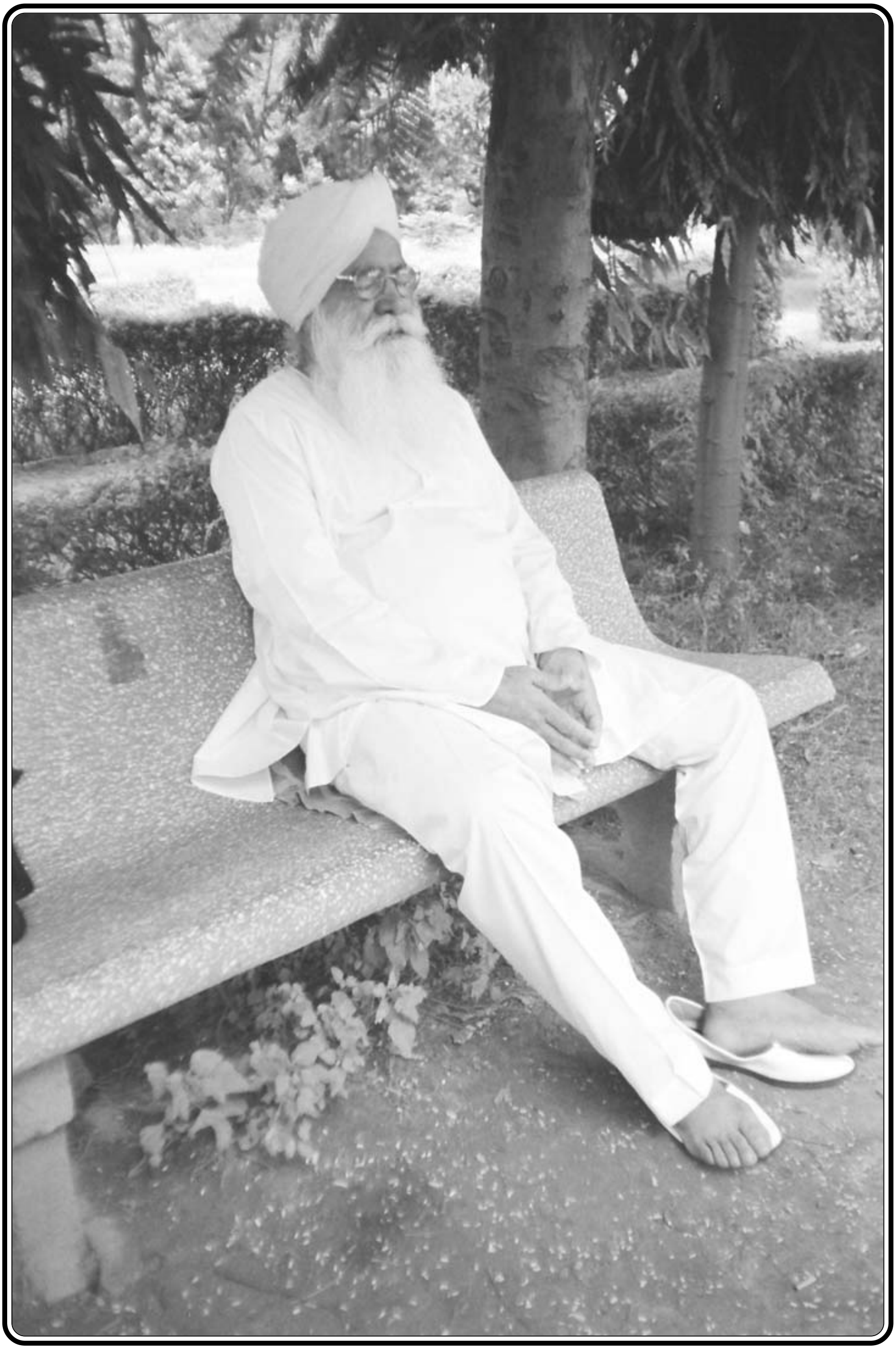

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

***एक प्रेमी** : प्यारे सतगुरु! आप हमें अभ्यास में तरक्की करने के बारे में और जिस जगह अभ्यास के कार्यक्रम होते हैं हम वहाँ आने वाले लोगों के लिए किस तरह बेहतर इन्तज़ाम कर सके इसके लिए आप हमें महत्त्वपूर्ण सलाह दे?*

बाबा जी : सबसे पहले प्रबंधको को वहाँ के वातावरण के मुताबिक ही इन्तज़ाम करना चाहिए। आप जिन प्रेमियों को बुला रहे हैं उन्हें यह जानकारी देनी चाहिए कि आपके लिए ये सामान लाना बहुत जरूरी है और अभ्यास का प्रोग्राम इतने दिन का है। जितने प्रेमियों ने उस प्रोग्राम में आना है उसी के मुताबिक इन्तज़ाम किया जाता है।

प्रबन्धकों को बहुत ध्यान रखना पड़ता है क्योंकि बाहर से आने वाले प्रेमी उन पर ही निर्भर होते हैं। आने वाले प्रेमियों का भी फर्ज बनता है कि उनकी जरूरत का सामान उनके पास हो। सभी प्रेमियों का फर्ज बनता है कि वे अपनी सेहत का ख्याल रखे ताकि दूसरे लोगों को परेशानी न उठानी पड़ी अगर हम थोड़े से बीमार हो जाते हैं तो जो प्रेमी हमारी सेवा करते हैं हमने उस यात्रा में जो कमाया होता है वह सेवा करने वालो को मिल जाता है।

आमतौर पर देखा जाता है कि हम पहले इतना अभ्यास नहीं करते। जब अपने साथियों को अभ्यास करते हुए देखते हैं तो हमारे दिल में तमन्ना होती है कि हम भी उनके जितना अभ्यास करें। जितनी नींद हम पहले लेते हैं उसे कम करते हैं अगर हम नींद को धीरे-धीरे कम करें तो कोई समस्या नहीं होती। जो इंसान एक दिन में दस घंटे सोता है अगर दूसरे दिन दो घंटे सोए तो स्वाभाविक ही उसके दिमाग में परेशानी हो जाएगी। अभ्यास के कार्यक्रम के दौरान हमें अपने

खान-पान का ख्याल रखना चाहिए। खाना खाते ही अभ्यास पर नहीं बैठना चाहिए ऐसा करने से मैदे के अंदर नुख्स पड़ने का डर होता है।

मैं जब बाहर टूर पर जाता हूँ तो मुझे जानकारी मिलती है कि प्रबन्धक लोग कार्यक्रम में आने वाले प्रेमियों के ठहरने और उनके खाने-पीने के लिए अच्छा इंतजाम करते हैं; कोई कसर बाकी नहीं रखते। बाहर से आने वाले प्रेमी उसमें थोड़ी बहुत तबदीली कर लेते हैं अपनी जिम्मेवारी नहीं समझते।

एक प्रेमी *: हम किस तरह अपने आपको सिमरन में स्थिर कर सकते हैं ताकि अपने ऊपर बिना जोर डाले बिना तनाव के लगातार सिमरन कर सकें?*

बाबा जी : हाँ भई! शुरु-शुरु में हमें थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है क्योंकि हमारे अंदर जन्म-जन्मांतरों के संकल्प उठ रहे हैं। इस जन्म में भी हमने इस तरफ कोई खास तवज्जो नहीं दी। आमतौर पर हमारा मन आजाद रहा है, इसे कल्पना करने की आदत है। जब हम सन्तों की शरण में जाते हैं तो सन्त हमें बताते हैं कि संसार में खींचने वाली ताकत सिमरन ही है।

हम दुनिया का सिमरन करके दुनिया का रूप हो गए हैं। दुनिया का सिमरन ही हमें यहाँ खींचकर लाता है। ऐसा कोई इंसान नहीं जिसकी सब ख्वाहिशें पूरी हो गई हों। किसी की दस ख्वाहिशें पूरी होती हैं तो पाँच अधूरी रह जाती हैं। किसी की पाँच ख्वाहिशें पूरी होती हैं तो दस अधूरी रह जाती हैं। जो ख्वाहिशें अधूरी रह जाती हैं मौत के समय उनके ही संकल्प-विकल्प आने शुरु हो जाते हैं।

आमतौर पर उस समय जो लोग हमारे आस-पास होते हैं हम उनसे कहते हैं मेरा यह काम रह गया है, वह काम रह गया है या उस समय अंदर ही रट लगी रहती है। आखिरी समय जिस तरफ ध्यान होता है इंसान वहाँ जाकर जन्म ले लेता है फिर अपनी ख्वाहिशें पूरी करता है और नई ख्वाहिशें पैदा कर लेता है।

सन्तों को हमारी इस कमजोरी का पता होता है। सन्त जानते हैं कि पानी की कमी से सूखी खेती पानी से ही हरी होती है। सिमरन, सिमरन को काटता है और ध्यान, ध्यान को काटता है। हम जिसे याद करते हैं उसकी शक्ल अपने आप ही अंदर टिकनी शुरु हो जाती है। जिस तरह हम अपने बच्चों को याद करें तो उनकी शक्ल अपने आप ही सामने आ जाती है। पत्नी बाहर गई हो पति को याद करती है तो फौरन पति की शक्ल आँखों के आगे आ जाती है। किसी को याद करना ही सिमरन करना हैं।

हमारा दुनियावी चीज़ों के साथ मोह है तभी हम इन्हें अंदर ठहराने की जगह बनाते हैं और इन्हें प्यार से याद करते हैं अगर प्यार है तभी किसी चीज़ को बार-बार याद किया जाता है। गुरु प्यार पर इसलिए जोर दिया जाता है क्योंकि गुरु का प्यार दुनियावी प्यार छोड़ने में हमारी मदद करता है, गुरु का दिया हुआ सिमरन दुनिया का सिमरन भुलाने में हमारी मदद करता है। जैसे बिना कोशिश किए दुनिया का सिमरन हमारे अंदर चलता है इसी तरह यह सिमरन हट जाता है और सन्तों का सिमरन हमारे अंदर चालू हो जाता है।

हमें सिमरन की शक्ति का ज्ञान नहीं अगर पता लग जाए तो हम सिमरन को छोड़े ही नहीं, सिमरन करने में कोई खास जोर भी नहीं लगता केवल तवज्जो ही इस तरफ करनी है। हम जैसे-जैसे ज्यादा सिमरन करेंगे एकाग्रता आनी शुरु हो जाएगी। जब थोड़ी सी एकाग्रता प्राप्त होती है तो हम कई किस्म के चमत्कार देख सकते हैं लेकिन सन्त सदा ही सेवकों को खबरदार करते हैं कि किसी भी रिद्धि-सिद्धि या चमत्कार से काम नहीं लेना।

गुरु को हमारे प्यार की जरूरत नहीं होती वह तो खुद अपने गुरु के प्यार में मस्त होता है। सेवक जब तक गुरु से सच्चा-सुच्चा प्यार नहीं करता तब तक इसकी जुबान पर वैसा सिमरन नहीं चढ़ता जैसा ही नुकसान उठाता है।

सन्त अपने सेवकों को अपनी देह के साथ नहीं 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं अगर हम 'शब्द-नाम' की कमाई करें तो हम ऐसे वाक्यात से बच सकते हैं और हमारे अंदर वह बुद्धि पैदा हो जाती है जो सच और झूठ का निर्णय कर सकती है।

एक प्रेमी *: जो सतसंगी गुरु को एक ही बार मिले होते हैं और उन्होंने भजन नहीं किया होता जब वे चोला छोड़ते हैं तो गुरु उनकी संभाल करता है, क्या उन्हें दोबारा मनुष्य जन्म लेना पड़ता है या उन्हें सीधे सचखण्ड भेजा जाता है?*

बाबा जी : मैंने बहुत बार सतसंगों में बताया है कि जो आत्मा गुरु के सम्पर्क में आ जाती गुरु उसकी संभाल करता है। जो गुरु में विश्वास रखते हैं शब्द-नाम की कमाई करते हैं या थोड़ा बहुत अभ्यास भी करते हैं; यह उस वक्त का फैसला होता है कि गुरु उन्हें ऊपर के मण्डलों में अभ्यास कराए या उन्हें फिर संसार मण्डल पर ख्वाहिशें पूरी करने के लिए भेजे जिसे हम चेलेंज नहीं कर सकते। दुनियावी तौर पर ऐसी कोई मिसाल नहीं जिससे समझाया जा सके।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्त-सतगुरु की ज्यादा से ज्यादा यही कोशिश होती है कि हमारा जीव फिर संसार में न आए। यह उलझनों भरा और अशांत देश है। यहाँ आकर जीव कर्मों का जाल फैला लेता है जिसमें फँस जाता है। सतसंगी को यह विश्वास लेकर चलना चाहिए कि मैं दोबारा इस दुखी दुनिया में न आऊँ, यह काल का जेलखाना है।''

अगर कैदी, कैद भुगतकर जेलर से कहे कि मेरी जगह सुरक्षित रखना मैं ऐब करके जल्दी ही वापिस आऊंगा तो इसमें जेलर का क्या कसूर है। दुनियावी माता-पिता भी नहीं चाहते कि हमारे बच्चे पर कोई मुश्किल आए या यह बुरी संगत में जाकर अपना भविष्य खराब करे। सतगुरु के दिल में तो हजारों माता-पिता जैसी हमदर्दी होती है। वे सोच

भी नहीं सकते कि हमारे नामलेवा दुखी हों या ऐसी परेशानियाँ खड़ी करें जिसके कारण उन्हें बार-बार संसार में आना पड़े।

सन्त-सतगुरु हमें बड़े विश्वास से 'शब्द-नाम' के साथ जोड़ते हैं। वे यही सोचते हैं कि जिन्हें नाम दें वे उनके जीवनकाल में ही पूर्ण हो जाए और भरोसे से कह सकें कि हम मुक्त हैं। सन्त-सतगुरु में जीवों को अपने नाम के बेड़े में चढ़ाने का विश्वास होता है क्योंकि वे उन लहरों से वाकिफ होते हैं जो काल ने हमारे रास्ते में रूकावटें बनाई हुई हैं। वे बड़े प्यार से अपने गुरु की दया से हमें उन रूकावटों से बचाकर ले जाते हैं। हम अपने आलस्य और गलती के कारण शरीर में बैठकर परेशानियाँ छेड़ लेते हैं बुराईयों में फँस जाते हैं।

सन्तों ने संसार में आकर सतसंग जारी किया। सतसंग में आकर ही हमें हमारी गलतियों और कमजोरियों का पता लगता है। हम उन गलतियों को छोड़ने के लिए सोचते भी हैं जो हमारे दुनियावी और परमार्थी भविष्य को खराब करती है। इन्हें छोड़ने से हमारी दुनियावी जिंदगी स्वर्ग बन जाती है और हम जीते जी परमात्मा के दरबार में हाजिर होने के काबिल बन जाते हैं।

एक प्रेमी *: महाराज जी! अपनी इच्छा को गुरु के प्रति समर्पित करने में क्या-क्या रूकावटें आती हैं?*

बाबा जी : सबसे पहले तो मन दीवार बनकर आगे खड़ा हो जाता है यह अहंकार को पैदा करता है। मन के और भी बहुत हथियार हैं जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह और मान बड़ाई है जो रुकावट बनकर खड़े हो जाते हैं। अपना आप गुरु को सौंपना बड़ा ही मुश्किल है। चालीस दिन के बच्चे जैसा बनकर जिंदगी बितानी पड़ती है। बच्चे को पता नहीं होता कि मेरी किसी के साथ ईर्ष्या-द्वेष है। बच्चा केवल चिल्लाना जानता है। उसे अपनी माता के प्रति प्यार होता है लेकिन वह बोलकर नहीं बता सकता कि तू मेरी माता है। वह माता की खुशबू और पैरों की चाल को पहचान लेता है।

इसी तरह हम अपने आपको गुरु के हवाले कर देते हैं, गुरु में समा जाते हैं तो हम भी उस बच्चे की तरह यह नहीं देखते कि गुरु पास है या नहीं! जैसे बच्चे को माता कि खुशबू ही बताती है इसी तरह शिष्य को भी एहसास होता है कि मेरा गुरु शब्द-रूप, नाम-रूप में मेरे अंदर है। जब हम यह विश्वास रखते हैं कि गुरु अंदर है तो अपने आप ही हमारे ऐब छूटने शुरु हो जाते हैं। हमारे अंदर किसी चीज़ का अहंकार नहीं रहता क्योंकि सबका कर्ता-धर्ता सतगुरु ही है।

प्यारेयो! हम कह देते हैं कि हमने अपने आपको गुरु के हवाले कर दिया है और गुरु को ही सब कुछ मानते हैं लेकिन यह देखा जाता है कि जब तक दुनिया जी-जी कहती है, हमारा शरीर तंदरुस्त है और हमारे पास धन-दौलत है तब तक हम बाहर गुरु के गुण गाते रहते हैं लेकिन अंदर गुरु को जगह नहीं देते।

कृष्ण भगवान ने उद्धो से कहा था, ''मैं जिसके ऊपर खुश होता हूँ जो मेरा भक्त बन जाता है मैं उसे तीन चीज़े-निरादरी, बीमारी और बेरोजगारी देता हूँ।'' जिसके पास ये तीन चीज़े आ जाती हैं और जिसने अपने आपको गुरु में जज्ब किया होता है वही गुरु की मौज में रह सकता है। जब तूफान आता है तो बड़े-बड़े पेड़ उखड़ जाते हैं। दुख में हम सदा ही घबराते हैं अरदासें करते हैं। वह जब थोड़ी सी परख करता है तो हम डोल जाते हैं। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

गुरु ने परख करी कुछ मन की छोड़ चला संगीत।

यह मन हमें मित्र बनकर भरमा लेता है। वैरी बनकर डरा लेता है और कोई न कोई रोग लगाकर यह हमें गुरु से दूर ले जाता है। हमें यह भी पता नहीं होता कि हमारा दुख में फायदा है या सुख में फायदा है? हम पिछले कर्मों के भुगतान कर रहे हैं। सतगुरु सदा ही दयालु होता है। कोई माँ अपने बच्चे को दुखी देखकर खुश नहीं होती इसी तरह सतगुरु हमें परेशान या दुखी देखकर खुश नहीं होते; वे जरूर मुनासिब मदद करते हैं।

एक महात्मा था। उसने बहुत भजन-सिमरन किया, वह अंदर जाता था; उसके काफी सेवक थे जो उसका आदर-मान करते थे। यह मालिक की मौज है कि वह कैसे कच्चों को पकाता है कैसे उनकी परख करता है? वह महात्मा जहाँ से गुजरता था वहाँ एक वेश्या रहती थी। वेश्या के पास एक कुत्ता था। वह वेश्या रोज महात्मा से यह कहती, ''महात्मा जी! आपकी दाढ़ी अच्छी है या मेरे कुत्ते की पूंछ अच्छी है?'' महात्मा उसे कोई जवाब नहीं देते चुप करके चले जाते थे। महात्मा ने चुप में ही अपनी जीत समझी। इस तरह यह सवाल करते-करते कई साल गुजर गए। महात्मा उसे न तो बुरा कहते और न ही भला कहते।

जब महात्मा का आखिरी समय आया तो उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि उस लड़की को बुलाकर ले आओ। बेशक वह वेश्या का काम करती थी लेकिन महात्मा की नजर में वह लड़की ही थी। महात्मा के शिष्यों के अंदर भी अभाव आया कि देखो! रात का समय है, यह बूढ़े हैं। अन्त समय में इनका ख्याल वेश्या की तरफ चला गया है। यह अपनी सारी उम्र की कमाई को खाक़ बना रहे हैं।

उस महात्मा के दो-तीन शिष्य अंदर जाते थे। उन्हें पता था कि सन्तों कि हर बात में राज़ होता है। वे जाकर उस लड़की को बुला लाए। महात्मा ने उस लड़की से कहा, ''बेटी! तू जो सवाल रोज़ करती थी वह सवाल आज कर।'' लड़की ने कहा आपने पहले तो कभी कुछ नहीं कहा। महात्मा ने कहा, ''मन का क्या ऐतबार है मन सदा ही धोखा देता है। मैं आज अपनी दाढ़ी तेरे कुत्ते की पूंछ से करोड़ो दर्जे अच्छी लेकर जा रहा हूँ।''

महात्मा की नम्रता का उस लड़की पर बहुत असर हुआ। उस लड़की ने कहा, ''महात्मा जी! आप मुझे माफ कर दें, मैंने सारी जिंदगी आपसे मजाक़ किया है। अब मैं आपके चरणों में विनती करती हूँ कि मैं आगे से कोई बुरा कर्म नहीं करूँगी। आप जो रास्ता मुझे बताएंगे मैं उस पर चलूँगी।''

जो महात्मा अंदर जाते हैं, जिन्होंने अपना आप गुरु को सौंप दिया है। अपना तन-मन गुरु पर कुर्बान कर दिया है जिन्हें पत्ते-पत्ते में, पशु-पक्षी में, दोस्त-दुश्मन में भी गुरु ही नजर आता है वही अपना आप गुरु के हवाले कर सकते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहते थे, ''अपना आप गुरु के हवाले करना कोई मामूली बात नहीं, अपनी मर्जी छोड़कर गुरु की मर्जी में चलना पड़ता है। गुरु जैसे रखे वैसे रहना पड़ता है। अपना आप सौंपकर कोई चूँ-चरा नहीं होती।''

कबीर साहब कहते है, ''दुनिया मन की मुरीद है। गुरु का मुरीद कोई विरला साध ही है। मुरीद मुर्दे का नाम है। यह तो नहलाने वाले की मर्जी है कि वह मुर्दे के ऊपर साबुन लगाए इत्तर डाले उसे सीधा करके नहलाए या उल्टा करके नहलाए। मुर्दे की अपनी कोई इच्छा नहीं होती।''

हम जब अपना आप गुरु को सौंप देते हैं तो हमें भी मुर्दे जैसा ही बनना पड़ता है। बुराई का मुँह सदा गिरावट की तरफ होता है। एक बुरा ख्याल भी अभ्यासी को ब्रह्मांड की चोटी से नीचे ले आता है। जब हम अपने आप को गुरु के हवाले कर देते हैं तो हमें स्वप्न में भी अभाव नहीं आता। हम स्वप्न में भी यह नहीं सोच सकते कि हमारा गुरु हमारे अंदर नहीं है या वह हमें देख नहीं रहा? ऐसी कोई जगह नहीं जहाँ गुरु ताकत काम नहीं करती। 'शब्द गुरु' कण-कण में व्यापक है। फर्क सिर्फ इतना ही है कि वह 'शब्द' सन्तों के अंदर प्रकट है और हम उस शब्द को प्रकट करने में लगे हुए हैं।

मैं बताया करता हूँ कि आज से तीस साल पहले हमारे इस इलाके में महाराज सावन सिंह का नामलेवा बाबा गुरबचन सिंह था। वह सतसंग किया करता था; हम उसका आदर किया करते थे, उसके लिए किराए पर लेकर अच्छी जगह बनाई हुई थी। एक दिन किसी प्रेमी ने अपने घर सतसंग रखवाया।

हमारे हिन्दुस्तान में रिवाज़ है कि जहाँ प्रेमी सतसंग के लिए इकट्ठे होते हैं, घर के लोग उनके लिए जरूर अन्न-पानी का इंतजाम करते हैं। सतसंगियों का ख्याल होता है कि जो सतसंग करता है उसका आदर करें और उसे अपने से अच्छा मानते हैं। उनका ऐसा ही ख्याल हुआ कि बाबा को अंदर बिठाकर चाय पिलाई जाए।

बाबा अभी स्टेज पर ही बैठा था कि एक आदमी ने थोड़ी जल्दबाजी की उसने चाय लाकर दूसरे प्रेमियों को देनी शुरु कर दी। बाबा गिरगिट की तरह रंग बदलने लगा, उसने सोचा! मैं बड़ा हूँ पहले चाय मुझे देनी चाहिए थी। दूसरे आदमी ने आकर बाबा से विनती की महाराज जी! आपके लिए चाय अंदर रखी है लेकिन उसे क्रोध ने इतना दबाया हुआ था कि वह भूल गया कि मैंने अभी लोगों को शान्ति का उपदेश दिया था और मैं क्या कर रहा हूँ? घरवाले डर के मारे चाय वहीं ले आए। उस बाबा ने सिर से पग उतारकर सिर नंगा कर दिया और कहने लगा, ''पहले चाय पीने का हक़ मेरा बनता था और आपने संगत को पहले चाय दे दी अब चाय मेरे सिर पर डाल दें।''

सतसंगी तो मन के बारे में जानते ही हैं कि यह मन कैसे धोखे करता है, किस तरह इंसान को परेशान करता है? वहाँ बेसतसंगी भी बैठे थे वे हाथ पर हाथ मारकर चले गए और कहने लगे कि अभी तो यह बाबा शान्ति का उपदेश कर रहा था देखो! यह कितना क्रोध के बस में है। मामूली बात पर उस बाबा ने इतना क्रोध दिखाया।

मैं बताया करता हूँ कि मैं बाबा बिशनदास का दिया हुआ 'दो-शब्द' का अभ्यास नियमित रूप से अठारह साल बिना बोझ समझे

करता रहा हूँ। आखिरी समय पर आकर मन ने यह ख्याल उठाया कि तुझे अभ्यास में बैठते हुए इसने साल हो गए हैं अंदर क्या है? मैंने पिछले गांव में भी गुफा बनाई हुई थी। मैंने शुरु से ही दुनिया से कम मेल-जोल रखा हुआ था। आखिर जब मैं गुफा से सौ-दो सौ कदम बाहर आया मुझे आवाज आने लगी, ''तुझे कसम है तू हिम्मत न हार, इस समय को हँसकर सँवार ले यही तेरे लिए फायदमंद है।''

मुझे यह नहीं पता था कि यह आवाज कहाँ से आ रही है। जब मैं वापिस गुफा में गया तो मुझे शान्ति आ गई। मैंने अपने आपको धिक्कार मारी अगर हमारे से गुरु के प्रति कोई अच्छा कर्म हो जाता हैं तो उसे भूल जाएं, अहंकार न करें कि हमने गुरु के प्रति यह कुछ किया है या हम कभी-कभी अभ्यास करते हैं। गुरु दया करके हमें थोड़ी बहुत मन के ऊपर सफलता भी प्राप्त करवाता है।

ऐसा नहीं कि हम अभ्यास करें तो गुरु हमें कुछ नहीं बख्शता। थोड़ी बहुत अंदर रसाई भी करवाता है लेकिन मन को मौका न दें अहंकार पैदा न होने दें। अंदर जो कुछ भी रसाई हो रही है यह गुरु की दया है, जो कुछ भी अच्छा हो रहा है गुरु की तरफ से ही हो रहा है। भजन करके अभ्यासी को यह नहीं कहना चाहिए कि मैं कर रहा हूँ। गुरु का धन्यवाद ही करें कि वह हमसे यह सब करवा रहा है।

प्यारेयो! जब भी हमारे साथ कुछ अच्छा होता है हम अपने आपको ही पेश करते हैं। ऐसे ख्याल को लेकर ही कुछ सिक्खों ने गुरु अर्जुन देव जी के पास सवाल किया कि महाराज जी! आपकी बानी में आता है कि सब कुछ परमात्मा ही करता है, इंसान के बस में कुछ भी नहीं।

करे कराए आपे आप मानुख के कछु न हाथ।

आपने कहा, ''यह सच्चाई है कि परमात्मा ही सब कुछ करता है, इंसान के हाथ में कुछ नहीं। अपने दिल में झाँककर देखें जब कोई अच्छा काम हो जाता है तो इंसान कहता है कि मैंने ऐसा किया तो ऐसा

हुआ लेकिन जब जिंदगी में कई कठिनाइयाँ आकर घेर लेती हैं तो उस समय हम यह नहीं कहते कि मुझसे यह गलती हुई या मेरे गलत व्यवहार की वजह से मेरे ऊपर मुसीबत आई है। जीव जन्म-मरण में लगा हुआ है। किसी जगह तो यह कर्ता-धर्ता बनता है और किसी जगह यह अपने आपको कुछ नहीं समझता।''

महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि जब हम अपना आप गुरु के हवाले करते हैं तो हमें अपनी मर्जी खत्म करनी पड़ती है।

मुझे प्रेमियों के पत्र आते हैं जिनमें वे अपनी जरूरतें ही पेश करते हैं किसी की पत्नी रुठी है किसी का पति रुठा है, कोई बीमार है कोई बेरोजगार है या कोई बुरा कर्म करके जेल में चला गया है हालाँकि उसने ही यह कर्म किया होता है उनकी यही विनती है कि दया करें। कोई भाग्यशाली जीव ही 'शब्द-नाम' की कमाई के बारे में लिखता है। ऐसे भी प्रेमी हैं जो गुरु के प्रति प्यार का पत्र लिखते हैं 'नाम' की माँग करते हैं और भजन-सिमरन के बारे में लिखते हैं।

महात्मा बने बनाए बर्तन होते हैं फिर भी वे संसार में आकर दुनिया को डेमोंस्ट्रेशन देने की खातिर खोज़ करते हैं, गुरु से 'नाम' लेते हैं और कठिन साधना करते हैं। जब उनके अंदर प्यास बढ़ जाती है तो परमात्मा अपने प्यारे सन्त को उनके पास भेजता है या उन्हें अपने पास बुला लेता है।

मैं अपने बारे में बताया करता हूँ कि जब मेरा मिलाप परमात्मा कृपाल से मिलाप हुआ मैंने आपसे यह नहीं पूछा, ''आप किस जाति के हैं? आपकी शादी हुई है या नहीं ? आप कहाँ रहते हैं? क्योंकि मेरी जिंदगी में महाराज जी से मिलने से पहले न कोई आपकी निन्दा करने वाला न ही कोई प्रशंसा करने वाला मिला था। यह सब आपकी दया थी कि आप मुझे मेरे घर आकर मिले और अपना प्यार बख्शा।''

आप सोचकर देखें! अगर हम सभी ऐसा ख्याल बना लें तो हमारा बर्तन तैयार ही होता है। हम जब 'नाम' लेंगे तो हमारी सुरत ऊपर चली जाएगी लेकिन ऐसा प्यार इंसान को पता नहीं कितने जन्मों के शुभ कर्म या भजन सिमरन के फल से मिलता है।

गुरु नानकदेव जी का एक शिष्य भाई बाबा बुड्ढा के नाम से मशहूर था। वह छोटी उम्र में ही गुरु नानकदेव जी के पास आया था। वह बहुत समझदारी की बातें करता था गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''तेरी उम्र तो छोटी है लेकिन तू बूढ़ो जैसी बातें करता है।'' तब से ही सब उसे बाबा बुड्ढा के नाम से पुकारने लगे।

बाबा बुड्ढा ने छठे गुरु हरगोविन्द तक तिलक दिया। आप काफी बुजुर्ग हो चुके थे। एक दिन आपने गुरु हरगोविन्द सिंह जी के पास विनती की, ''मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूँ। मैं छः गुरुओं को तिलक भी दे चुका हूँ। मुझे अभ्यास करते हुए काफी साल हो गए हैं अब तो मुझे अभ्यास नहीं करना चाहिए।''

गुरु हरगोविन्द जी ने हँसकर कहा, ''बाबाजी! हम आपका आदर-सत्कार करते हैं। आप तिलक देने की रस्म पूरी करते हैं अगर आपने अभ्यास करना छोड़ दिया तो संगत कैसे अभ्यास करेगी? सब यही कहेंगे कि जब बाबा बूढ्ढा अभ्यास नहीं करता तो हम क्यों करे?''

जिन्होंने अपना आप गुरु के हवाले कर दिया है, गुरु रूप हो चुके हैं वे रुहानियत का आनन्द पाते हैं। समय पर उठकर अभ्यास करते हैं हमेशा अपने आपको गुरु के हवाले किए रखते हैं। वे जहाँ भी जाते हैं, उठते हैं बैठते हैं सब साँस ग्रास गुरु के लेखे में ही लगाते हैं। ऐसा नहीं कि मालिक के दरबार पहुँच जाने के बाद हम अपने आपको गुरु से अलग कर लें।

सच्चाई यह है कि अंदर जाकर प्यार बढ़ता है फिर हम इसे छोड़ नहीं सकते। गुरु को अपना आप हवाले करने पर ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं क्योंकि प्रेम की कहानियाँ कभी खत्म नहीं होती।

❋❋❋

धन्य अजायब

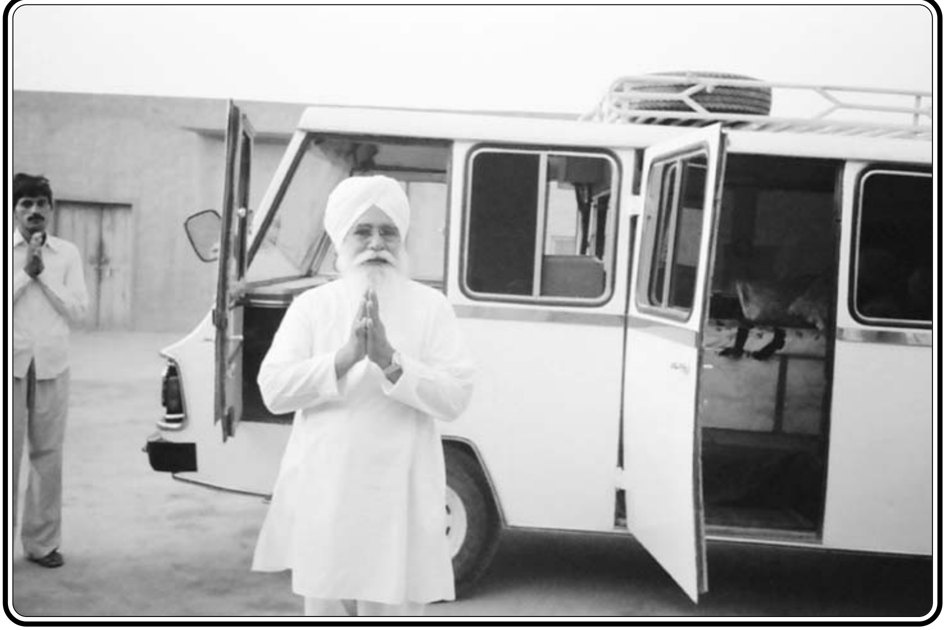

गुरु प्यारी साध संगत जी

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया-मेहर से हर साल की तरह इस साल भी दिल्ली में 14, 15 व 16 मई - 2010 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

सभी भाई-बहनों के चरणों में विनम्र निवेदन है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल
बेहरा इन्कलेव, पश्चिम विहार
(नजदीक पीरागढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

राकेश कालिया	सोनू सरदाना	सुरेश चोपड़ा	राकेश शर्मा
98101-94555	98107-94597	98182-01999	98102-12138